आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13

सृष्टि संवत् 1960853114
विक्रम संवत् 2070
दयानन्दाब्द 190

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखप

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 10 अंक : 2 रोहतक, 7 जून, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

लोग ईश्वर को तो चाहते ही नहीं

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला (हरयाणा)

किसी ने एक विद्वान् से पूछा कि ईश्वर सब किसी को मिल सकता है? विद्वान् ने उत्तर दिया कि ईश्वर सब को मिल सकता है। तो यह सबको मिलता क्यों नहीं? विद्वान् ने कहा कि तुम इस शहर में जाओ और उनको पूछो आप क्या चाहते हो? वह शहर में गया और हर प्रकार के लोगों से इस विषय में पूछने लगा। पूछने के पश्चात् विद्वान् के पास गया। विद्वान् ने पूछा, पता कर आये लोग क्या चाहते हैं? उत्तर में उसने कहा, कोई धन चाहता है, कोई सुन्दर स्त्री चाहता है, कोई कोठी-कार चाहता है, कोई राजनेता बन जनता का धन खसोटना चाहता है, कोई संतान चाहता है, कोई दु:ख-निवारण चाहता है, कोई दु:खी जिन्दगी से छुटकारा पाना चाहता है, परन्तु किसी ने यह नहीं कहा कि मैं ईश्वर को पाना चाहता हूँ, तो फिर ईश्वर मिलेगा कैसे? जब कोई उसे पाना ही नहीं चाहता। यह वास्तविकता है।

सोचने-विचारने के लिए यहाँ पर एक प्रश्न उठता है कि यदि लोग ईश्वर को नहीं चाहते, तो ये मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारों का निर्माण क्योंकर किया जाता है? इससे ऐसा आभास होता है कि लोग ईश्वर को तो चाहते हैं, परन्तु ईश्वर को जानते नहीं और जिनको वे चाहते हैं, वे ईश्वर नहीं। हिन्दू मुझे तो मालूम नहीं कि हिन्दू शब्द का प्रयोग क्यों हुआ? अंकगणित को अपना पूज्य भगवान् मानते हैं, गिनती ही नहीं और इनमें से कोई किसी के देवता। भगवान् के विरुद्ध एक शब्द भी कह दे, तो मरने मारने को तैयार हो जाते हैं। कुछ ऐसे हैं जो कट्टरपंथी हैं, अगर उनके मजहब के चुन गए ईश्वर को न मानो तो उन्हें अपशब्द कहे जाते हैं। जिसने भी जिसे भगवान् माना है, वे उसको इसलिए चाहते हैं कि वह उनकी मांगों को स्वीकार कर लेता है। ऐसा उनका मानना है, ऐसी भावना है।

किसी ने कहा ये ईश्वर हो नहीं सकते, ईश्वर तो निराकार है, उसकी प्रतिमा कैसे बन सकती है? वह तो सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी सबको देखता है, सब कुछ सुनता है और सबको उसके पाप-पुण्य कर्मों का यथायोग्य फल देता है न किसी को कम न किसी को ज्यादा और वह किसी के पाप क्षमा भी कभी नहीं करता। लोग ऐसा तो चाहते ही नहीं कि उनका ऐसा ईश्वर हो, वह तो चाहते हैं कि हम बुरा करें और उनसे पाप क्षमा करने की प्रार्थना करें तो वह हमारी प्रार्थना को स्वीकार करके हमारे पाप क्षमा कर दे। ऐसे ईश्वर को कौन चाहेगा जो उनके कृत-कर्मों को देखें, देखकर उनकी सजा दे। वे तो ऐसे ईश्वर को तो चाहते हैं कि जो उनको देखे नहीं, चाहे वो कुछ भी करते रहें। यही वास्तविकता है।

आर्यसमाज ईश्वर के सत्य स्वरूप को बताता है और उसके द्वारा ही सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय की जाती है, उसके गुणों का भी वर्णन करता है, उक्त बातों का भी उपदेश करता है कि ईश्वर पाप क्षमा नहीं करता और किसी भक्त, पीर, पैगम्बर, फिरस्ते आदि के आधीन नहीं, वह स्वतन्त्र सत्ता है। उसने अपनी सर्वसामर्थ्य से इस सारे ब्रह्माण्ड का संचालन, पालन और संरक्षण कर रखा है।

श्रीकृष्ण का गीता उपदेश समझना चाहिये, उन्होंने जब वह थे तो ईश्वर की उपासना की। 14 वर्ष तक वन में घोर तपस्या करने के उपरान्त योग के द्वारा ईश्वर का साक्षात्कार किया और एक सुयोग्य, शूरवीर योद्धा सन्तान प्रद्युम्न को उत्पन्न किया और श्रीकृष्ण क्या थे? यह महाभारत में पढ़ो।

युधिष्ठिर के राजसूय-यज्ञ के समय की चर्चा है। अपना-अपना हित चाहने वाले घर-घर में राजा बैठे हुए थे। कोई शक्तिसम्पन्न साम्राज्य नहीं था। सम्राट शब्द ही उस समय प्राय: लुप्त हो चुका था। श्रीकृष्ण ने इस प्रकार अनेकश: खण्डित और विभक्त भारत को एक दृढ़ केन्द्र के नीचे संगठित और आबद्ध करने के लिए युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञ का परामर्श दिया। चारों भाइयों के नेतृत्व में पांडव सेनायें न केवल भारत किन्तु समस्त पृथ्वी पर इन्द्रप्रस्थ को सशक्त केन्द्र बनाने, आर्य साम्राज्य का ध्वज फहराने निकल पड़ी। जिस राजा ने इस केन्द्रीय शक्ति को चुनौती दी, पाण्डव सेना ने उससे युद्ध किया। श्रीकृष्ण तो इस विशाल अनुष्ठान के सूत्रधार थे। जब पाण्डव दल में कार्य का विभाजन हो रहा था, तब उसकी खबर श्रीकृष्ण जी को मिल गई। युधिष्ठिर अपने भाइयों और अमात्यों से परामर्श कर ही रहे थे कि किस विधि से श्रीकृष्ण को यज्ञ के प्रमुख पद पर आसीन किया जाये, भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर की अन्तर्वेदना को अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से समझ लिया और स्वत: श्रीकृष्ण के विषय में युधिष्ठिर को परामर्श दिया कि जिस प्रकार सब नक्षत्रों में सूर्य अपने तेज और उष्णता से दीप्तिमान् होता है इसी प्रकार श्रीकृष्ण अपने तेज और पराक्रम से समस्त राजन्य वर्ग में प्रकाशयुक्त हैं। जिस प्रकार सूर्य हमें प्रकाश देता है, वायु हमें आह्लाद देता है, इसी प्रकार श्रीकृष्ण हम सबके मध्य हैं। श्रीकृष्ण ने राजसूय यज्ञ सम्बन्धी चर्चा के बाद स्वयं सेवा का दायित्व ले लिया और कहा, ''राजसूय यज्ञ में पधारे विद्वानों और ऋषि-मुनियों को प्रक्षालित करने का काम मैं करूँगा और इस उत्तम सेवा का फल प्राप्त करना चाहूँगा।''

श्रीकृष्ण क्या थे? श्रीकृष्ण को गोपियों के रासलीला करने वाला कहने वालो जरा अपनी बुद्धि से काम लो, ईश्वर ने सर्वश्रेष्ठ वस्तु 'बुद्धि' तुम्हें सोचने विचारने को दी है, क्योंकि आप लोग निर्बुद्धियों के कहने पर श्रीकृष्ण पर लांछन पर लांछन लगाये जा रहे हो और दूसरी ओर उन्हें अपना भगवान् भी मानते हो, क्या कुबजा दासी के साथ जैसा पाखण्डी कहते हैं, उन पर दोष लगाते हैं, ये बातें सच हैं, अगर सच हैं तो वह पूज्य कैसे हो सकता है? जरा सोचो बुद्धि के साथ। नहीं सोचा तो कुछ भी नहीं लगेगा हाथ। आर्यसमाज ने श्रीकृष्ण जी महाराज को समझा और उनके गुणों को लोगों के सम्मुख रखा तो मूर्ख लोग क्या कहने लगे कि आर्यसमाज तो श्रीकृष्ण का विरोधी है। ऐसा कहने वाले अकल के अंधे, कान के बहरे नहीं देखते सुनते कि श्रीकृष्ण पत्नी रुक्मिणी थी और राधा उनकी प्रेमिका नहीं थी, ये सब भागवत वाले ने कपोल कल्पित कहानी घड़ रखी हैं। पाखण्डी, व्यभिचारी ऐसा लांछन श्रीकृष्ण जी पर लगाते हैं। महाभारत में उनके जीवन के विषय में श्रेष्ठ कार्यों का वर्णन है। श्रीकृष्ण बहुत सुलझे हुए शूरवीर, पराक्रमी, ईश्वर में विश्वास रखने वाले और कर्म को प्रधान मानने वाले थे, उन्होंने गीता में शुभकर्म करने का उपदेश दिया है और इसके

शेष पृष्ठ 2 पर....

देश में महिलाओं के प्रति हो रहे अपराधों में कैसे कमी हो?

❑ कृष्ण वोहरा, सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, 641, जेल ग्राउण्ड, सिरसा

नित्यप्रति समाचार-पत्रों में अश्लीलता एवं अनैतिकता की खबरें पढ़कर ऐसा आभास होने लगता है जैसे सारे देश के नवयुवक पथभ्रष्ट हो गए हों, लेकिन ऐसा नहीं है। जैसे एक मछली सारे जल को गंदा करती है वैसी ही स्थिति आज दिखाई पड़ती है। यदि हम सब मिलकर सामाजिक परिवेश को स्वच्छ बनाने का संकल्प लें तो निश्चित रूप से महिलाओं के प्रति बढ़ रहे अपराधों में कमी हो सकती है। आज हमारे परिवारों में पश्चिमी सभ्यता का अन्धानुकरण हो रहा है। हमारे खान-पान, रहन-सहन और आचार-विचार में शुद्धता नहीं रही है। दूरदर्शन के मोह ने हमें आलसी एवं अकर्मण्य बना दिया है। देर रात के अश्लील कार्यक्रमों को देखने के कारण हमारे सात्त्विक विचार नष्ट हो रहे हैं। तामसिक प्रवृत्तियों के प्रभाव के कारण हमारे परिवारों में किशोर अपराध वृत्तियों में संलिप्त हो रहे हैं। सम्पन्न, मध्यम एवं निर्धन परिवारों के किशोर अपराधों का शिकार हो रहा है। इसलिए देशहित में सरकार दूरदर्शन से प्रसारित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों पर नियन्त्रण रखने के लिए कठोर कदम उठाए। केवल ऐसे कार्यक्रम प्रसारित किये जायें जो राष्ट्रभक्ति के संस्कारों से ओतप्रोत हो। महाराणा प्रताप, शिवाजी, गुरु गोविन्दसिंह, महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, वीर भगत सिंह, सुभाष चन्द्र बोस सरीखे महापुरुषों के जीवन से सम्बन्धित कार्यक्रम प्रस्तुत किये जायें। हम सब अपने-अपने परिवारों में प्रात: जल्दी उठने की और रात्रि समय पर सोने की आदत डालें।

महिलाओं के प्रति बढ़ रहे अपराधों का दूसरा मूल कारण है—किशोरों का बेरोजगार होना। आज देश में लाखों नवयुवक बी.ए. एवं एम.ए. की डिग्रियाँ हाथ में लेकर भी बेरोजगार हैं, यदि कहीं रोजगार मिलता है तो बहुत कम वेतन पर। आर्थिक शोषण के कारण इन नवयुवकों के कदम अपराध की दुनिया की ओर बढ़ जाते हैं। चोरी, डाका, चैन स्नेचिंग की घटनाओं को अंजाम देने वाले बेरोजगार नवयुवक ही हैं। इसलिए आज आवश्यकता है देश में आई.टी.आई. जैसे तकनीकी संस्थाओं की, ताकि पढ़-लिखकर नवयुवक अपना निजी व्यवसाय करने में सक्षम हो सके। सरकारी नौकरियों के पीछे भागने की उसकी मृगतृष्णा समाप्त हो सके।

तीसरा मूल कारण है—हमारी विकृत मानसिकता। आज हर व्यक्ति रातोंरात अमीर होने का स्वप्न लेने लगा है। वह अधिक से अधिक धन पाने के लिए किसी भी प्रकार का गलत कार्य करने के लिए तत्पर रहता है। समाज में आ रहे खुलेपन तथा इंटरनेट के कारण भी नवयुवक अपराध की अन्धी गली में प्रवेश कर जाता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि विकृत मानसिकता को समाप्त किया जाए। जापान, इंगलैण्ड, जर्मनी, इजराईल आदि देशों के नवयुवकों में विकृत मानसिकता इसलिए नहीं है, क्योंकि यहाँ के स्कूलों, कॉलेजों, और विश्वविद्यालयों में राष्ट्रभक्ति के संस्कारों से परिपूर्ण शिक्षा दी जाती है। यहाँ उन्हें उन महापुरुषों के बारे में पढ़ाया जाता है, जिन्होंने राष्ट्र की नींव को दृढ़ किया है। इसीलिए यहाँ के नवयुवक अपने राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने में लगे हैं।

हमें भी राष्ट्रभक्ति के संस्कारों से एक नयी ताकतवर पीढ़ी का निर्माण करना होगा जिसके मन में महिला के प्रति सम्मान होगा। यह ऐसी पीढ़ी होगी जो हर महिला में अपनी माँ या बहिन का स्वरूप देखेगी। यह स्वप्न उस दिन पूरा होगा जब राष्ट्रभक्ति के संस्कारों से ओतप्रोत हजारों-लाखों लोग समर्पित भाव से इस राष्ट्र के पुनर्निर्माण के इस यज्ञ में अपना समर्पण करेंगे। केवल इसी संकल्प से ही देश में महिलाओं के प्रति हो रहे अपराधों में कमी होगी।

प्रसिद्ध कवि शिव ओम् अम्बर के शब्दों में—

देश के वातावरण को देख करके,
मैं विचारों को बदलना चाहता हूँ।
पालकी उल्टी दिशा को जा रही है,
मैं कहारों को बदलना चाहता हूँ।

प्रस्ताव

दिनांक 19.5.2013 (रविवार) को आर्यसमाज बीकानेर-गंगायचा अहीर जिला रेवाड़ी के प्रांगण में साप्ताहिक सत्संग व यज्ञोपरान्त सभा में करौंथा आश्रम में पुलिस द्वारा निहत्थे प्रदर्शनकारियों पर की गई निर्मम व कठोर कार्यवाही की घोर निन्दा की गई। तत्पश्चात् शहीद होने वाले सर्वश्री उदयवीर शास्त्री, संदीप आर्य व श्रीमती प्रोमिला देवी के बलिदान का प्रत्यक्षदर्शी मास्टर दयाराम आर्य, उपमंत्री आर्यसमाज ने घटना की विस्तृत जानकारी दी। सभी उपस्थित सदस्यों ने दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत शहीद आत्माओं को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की तथा सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया कि आगामी आन्दोलन के लिए जैसा भी आदेश आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा व सभा नेतृत्व से मिलेगा, आर्यसमाज बीकानेर-गंगायचा अहीर तन-मन-धन से समर्पित है। —**धर्मवीर आर्य मन्त्री**

लोग ईश्वर को तो चाहते ही नहीं..... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

अतिरिक्त गीता में किसी ने कुछ लिख दिया है, तो वह श्रीकृष्ण की मान्यता नहीं हो सकती। पाखण्डियों ने श्रीकृष्ण को अवतार बतलाकर और उनके विषय में अशोभनीय बातों का उल्लेख करके अपने कृत कर्मों पर पर्दा डालने का काम किया है, ताकि उन पर कोई उंगली उठाये तो वह श्रीकृष्ण का दृष्टान्त उनके सम्मुख रख दें कि श्रीकृष्ण जी भी तो ऐसा करते थे और ऐसा कहते हुए मैंने सुना है। श्रीकृष्ण ईश्वर की उपासना करते थे, वे स्वयं को कभी ईश्वर नहीं कहते थे, उन्होंने यही कहा कि जिस मार्ग पर मैंने चलकर ये सिद्धियाँ प्राप्त की हैं, उनको तुम भी प्राप्त करो। सृष्टि रचना को कितने वर्ष हुए श्रीराम और श्रीकृष्ण तो सृष्टि रचना के बाद पैदा हुए हैं, सृष्टि की उस समय रचना किसने की थी, क्या सृष्टि की रचना स्वयं हो गई? क्या किसी के सन्तान बिना उत्पत्ति क्रिया के हो सकती है? अगर नहीं, तो सृष्टि रचना भी स्वयं नहीं हुई और उसके रचने वाला ईश्वर है, जो अनन्त है, जिसका कभी अन्त और आरम्भ नहीं। वही सारे ब्रह्माण्ड को रचता है, वेदों द्वारा ज्ञान का प्रकाश करता है, सब पदार्थ प्रकृति में दान में देता है, कोई कर नहीं लेता, सारे ब्रह्माण्ड का पालन करता है तथा रक्षा करता है। उस परमात्मा को जानो और मानो।

इन पाखण्डियों के चंगुल से बाहर निकलो और पुरुषार्थी बनो, पुरुषार्थ के बगैर कुछ नहीं मिलेगा। बिना पुरुषार्थ के कोई कार्य नहीं होता, जिसके पास आप मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, चर्च आदि में जाते हो, उनके पास स्वयं कुछ नहीं है, वह तो आपसे उल्टा मांगने के लिए पाखण्डियों ने काल्पनिक प्रतिमा घड़ के बिठा रखी हैं जो स्वयं के लिए भी कुछ नहीं कर सकती, क्योंकि वे जड़ हैं, चेतन सत्ता ही कार्य करती है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में बिक्री हेतु निम्न साहित्य उपलब्ध हैं। कृपया इसका लाभ उठावें।

क्र०	पुस्तक का नाम		मूल्य
1.	प्रो० शेरसिंह : एक प्रेरक व्यक्तित्व	—	20-00
2.	धर्म-प्रवेशिका	—	10-00
3.	धर्म-भूषण	—	12-00
4.	वैदिक सिद्धान्त सार	—	20-00
5.	सत्यार्थप्रकाश	—	30-00
6.	वैदिक उपासना पद्धति	—	8-00
7.	पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जीवन चरित	—	10-00
8.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	—	50-00
9.	संस्कारविधि	—	30-00
10.	हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान	—	30-00
11.	पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन चरित	—	25-00
12.	महर्षि दयानन्द तथा वेदों पर आक्षेपों का उत्तर	—	15-00
13.	आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो?	—	10-00
14.	पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन	—	100-00
15.	स्मारिका-2002	—	10-00
16.	प्राणायाम का महत्त्व	—	15-00
17.	महाराणा प्रताप तथा उनके वंशज	—	10-50
18.	स्मारिका 1987	—	10-00
19.	स्मारिका 1976	—	10-00
20.	अमर हुतात्मा भगत फूलसिंह जीवनी	—	15-00
21.	अमर शहीद पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' जीवनी	—	30-00
22.	स्वामी श्रद्धानन्द जीवनी (कल्याण मार्ग का पथिक)	—	80-00

ओ३म्

स्वाध्याय का लाभ

-: वेद-मन्त्र :-

अया धिया च गव्यया पुरुणामन् पुरुष्टुत।
यत् सोमेसोम आभुवः ॥ 4 ॥ 188 ॥ (सामवेद)

यह स्वाध्याय करने वाला वत्स ज्ञान (श्रुत) को ही अपनी शरण (कक्ष) बनाता है सो 'श्रुतकक्ष' नाम वाला हो जाता है और प्रभु से कहता है कि [अया] (अनया) = इस [धिया] = बुद्धि से [च] = और [अया गव्यया] = इस ज्ञानेन्द्रियों के समूह से ऐ [पुरुणामन् पुरुष्टुत] = प्रभो! यह तो निश्चित ही है [यत्] = कि [सोमे सोमे] = प्रत्येक विनीत बने पुरुष में [आभुवः] = आप प्रकट हुआ करते हैं।

स्वाध्याय से तीन लाभ होते हैं—पहला नियमित जीवन, दूसरा निर्मल दीप्ति, तीसरा लाभ यह है कि मनुष्य की बुद्धि व ज्ञानेन्द्रियों का सुन्दर विकास होता है। व्यायाम से जैसे हाथ की शक्ति का विकास होता है उसी प्रकार स्वाध्याय ज्ञानोपकरण बुद्धि व ज्ञानेन्द्रियों की व्यायाम ही तो है। सो इससे उनका विकास होता ही है।

बुद्धि व ज्ञानेन्द्रियों के विकास होने पर यह संसार में एक महती शक्ति का कार्य करते हुए अनुभव करता है। उसी प्रभु का नाम यह खूब जप करता है और उसी का निरन्तर स्तवन करता है। उसका जप व स्तवन, पुरु है (पृ पालनपूरणयोः) इसका पालन व पूरण करने वाला है। इसे अभिमान आदि दुर्भावनाओं का शिकार होने से बचाता है और इसकी न्यूनताओं को दूर करता है।

जितना-जितना इसका जीवन पूर्ण होता जाता है उतना-उतना ही यह सोम बनता चलता है। एवं स्वाध्याय का चौथा लाभ यह था कि मनुष्य में संसार की संचालक रहस्यमयी शक्ति का चिंतन होता है और यह उसका स्तवन व जप करता है। इससे पांचवां लाभ यह होता है कि यह उत्तरोत्तर विनीत बनता जाता है। इस सोमे-सोमे= विनीत और विनीत ही श्रुतकक्ष में आभुवः=प्रभु का प्रकाश होता है। यह श्रुतकक्ष प्रभु का साक्षात्कार कर पाता है। यह मानव जीवन का चरम उत्थान है—इसी में इस जीवन की सार्थकता व सफलता है। यहां यह जीवन समाप्त होकर मानव को मुक्त कर देता है।

भावार्थ—स्वाध्याय से हम बुद्धि व ज्ञानेन्द्रियों का विकास करें, संसार की संचालक शक्ति के नामों का जप व स्तुति करने वाले बनें, सोम बनकर प्रभु का दर्शन करें।

—आचार्य बलदेव

स्व० श्रीमती धनपती देवी की शोकसभा

गाँव गुमाना जिला सोनीपत निवासी स्व० श्री पर्वतसिंह स्वतन्त्रता सेनानी की धर्मपत्नी श्रीमती धनपती देवी का 21.5.2013 को निधन हो गया। वे 80 वर्ष की थीं। वे अपने पीछे चार बेटे डॉ० आजाद सिंह, डॉ० सुखदेव सिंह, सुखवीर शास्त्री व बलराज शास्त्री और तीन बेटियाँ व पोते-पोतियों सहित भरा पूरा परिवार छोड़ गई है। प्रातः 10 बजे हनुमान कालोनी सुखपुरा चौक में 26 मई रविवार 2013 को उनकी शान्ति सभा वैदिक रीति से सम्पन्न हुई। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं परिजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। उनके परिवार ने शान्ति यज्ञ के उपरान्त निम्नलिखित संस्थाओं को दान दिया—चौ० लखीराम अनाथालाय 1100 रु०, गऊशाला खिड़वाली 1100 रु०, गुरुकुल भैयापुर लाढौत 1100 रु०, कन्या गुरुकुल लोवां कलां 2100 रु० स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली 1100 रु० लावारिश पशु पीड़ित संघ 1100 रु० जनसेवा संस्थान भिवानी रोड 3100 रु०, सीताराम बेसहारा पशु-पक्षी सेवा संस्थान जीन्द रोड रोहतक 1100 रु०। इस शान्तियज्ञ पर पूर्व डी.आर.ओ. श्री महेन्द्र सिंह धनखड़ जी ने माता जी के प्रति शोक संवेदना व्यक्त की, इसके अतिरिक्त श्री सन्तराम आर्य, श्री बलवीर सिंह शास्त्री, बहन दयावती तथा गुरुकुल लोवाकलां से पधारी छात्राओं ने भी शोक संवेदना व्यक्त की।

—सत्यवान आर्य, सभा कार्यालय, रोहतक

वेदकथा सम्पन्न

आर्यसमाज मन्दिर नगीना मेवात में तारीख 1 मई 2013 से 5 मई रविवार तक वेदकथा का आयोजन किया गया। कथाकार श्री देशराज जी शास्त्री भरतपुर राजस्थान व पूर्णसिंह जी की भजनमण्डली थी, प्रातःकाल परिवारों में यज्ञ भजन उपदेश तथा रात्रि 8 से साढ़े दस बजे तक दिव्य उपदेश सत्संग चलता रहा। श्री देशराज शास्त्री ने सृष्टि के आदि में अमैथुनी सृष्टि की उत्पत्ति तथा ऋषियों द्वारा वेदज्ञान प्राप्त होने के बारे में बताया। यह घर परिवार सब एक दिन छोड़कर जाना है बताते हुए राजा भोज व मुंज का दृष्टान्त सुनाकर सभी श्रोताओं को भावविभोर कर दिया तथा यह भी बताया कि हर अच्छा कार्य यज्ञ की श्रेणी में आता है। नगीना समाज के इस पाँच दिवसीय वेदकथा में नजदीक ग्रामों व कस्बों से लोग पहुँचे, नूँह-भादस, करेडा, उलेटा, मूलथान, पुन्हाना, फिरोजपुर, साकरस, मरोड़ा, बलई, जलालपुर, भादस गुरुकुल, मरोरा गऊशाला से भी पहुँचे। कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु प्रधान सुशील कुमार-संरक्षक सुनील कुमार, शिवकुमार, मानकचन्द सैनी, दीपक कुमार आदि सभी ने भरपूर सहयोग दिया।

—पदमचन्द आर्य, संयोजक वेदकथा नगीना, मेवात

वैदिक सत्संग समारोह का आयोजन

आर्यसमाज गोहानामण्डी के **85वें मासिक वैदिक सत्संग समारोह** का आयोजन **दिनांक 9 जून 2013, रविवार** को आर्यसमाज मन्दिर, गुढ़ा रोड, गोहाना (सोनीपत) में आयोजित किया जाएगा। इस सत्संग का आयोजन महीने के दूसरे रविवार को किया जाता है। आज संसार में भौतिक उन्नति खूब हो रही है लेकिन मानव की मानवता का ह्रास होता जा रहा है। संसार में सुख-शान्ति का वातावरण बनाने के लिए परमपिता परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान का प्रचार-प्रसार अति आवश्यक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु आप सभी से निवेदन है कि सपरिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित सभी कार्यक्रमों के समय पर उपस्थित होकर धर्मलाभ उठाकर अनुगृहीत करें।

आमन्त्रित वैदिक विद्वान् : प्रो. ओमकुमार जी,
उपप्रधान—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक
कार्यक्रम-9 जून 2013 प्रातः 8 बजे से 11 बजे तक
यज्ञ, भजन, प्रवचन
निवेदक : आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

स्व० श्रीमती धर्मोदेवी की स्मृति में विशेष यज्ञ का आयोजन

गाँव सांघी जिला रोहतक निवासी भलेराम आर्य की धर्मपत्नी स्व० श्रीमती धर्मोदेवी की स्मृति में उनके निवास स्थान F-8 इन्द्रप्रस्थ कालोनी सोनीपत रोड, रोहतक में विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। उनके सुपुत्र प्रदीपकुमार हुड्डा व उनकी धर्मपत्नी पूनमरानी यज्ञ के मुख्य यजमान थे। उन्होंने यज्ञ में विशेष आहुति डालते हुये अपनी माताजी स्व० धर्मोदेवी की 66 वर्ष की आयु होने पर 66 पौधे लगाने का संकल्प लिया। अपनी माता जी के सरल स्वभाव व किसी की निन्दा न करना तथा किसी से झगड़ा न करने की विचार से प्रेरित होकर एक त्रैवणी (बड़, पीपल तथा नीम) किसी स्कूल या अन्य सार्वजनिक स्थान पर लगाने का संकल्प किया। अपनी माता जी की धार्मिक भावना के अनुसार कुछ धार्मिक साहित्य का भी वितरण किया जिसमें 100 पुस्तकें हमारी दिनचर्या, 400 प्रतियाँ गीता सार, भारत को भारत रहने दो तथा दिनचर्या प्राणऊर्जा पर आधारित वितरित की तथा भविष्य में भी धार्मिक संस्थाओं से अपनी माताजी की तरह जुड़े रहने का संकल्प लिया। यज्ञ के ब्रह्मा पूजनीय जगदेवसिंह जी विद्यालंकार ने भी यज्ञ के पश्चात् यजमान परिवार को आशीर्वाद दिया तथा अपनी माता जी स्व० धर्मोदेवी के गुणों को हमेशा याद रखने की प्रेरणा प्रदान की। यजमान दम्पति ने सभी अतिथियों को यज्ञ पर आने का धन्यवाद किया और उनके भोजन की व्यवस्था की।

इस अवसर पर परिजन, रिश्तेदार तथा आर्य सुखवीर सिंह दहिया, रणवीर सिंह मान, कंवरसिंह गुलिया, अजीत शास्त्री आदि शामिल हुए।

—सुखवीर सिंह दहिया

महर्षि के शब्दों में वेदों की महत्ता

❑ खुशहालचन्द्र आर्य, C/o गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मागांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7

स्वामी जी चित्तौड़ से चलकर मिती द्वितीय श्रावण बदी 13 सं० 1939 तदनुसार सन् 1882 में उदयपुर पधारे। वहाँ नौ-लखा महल में विराजमान हुए। उदयपुर में पधारने के एक मास बाद मौलवी अब्दुर्रहमान ने स्वामी जी से वेदों सम्बन्धी कुछ प्रश्नोत्तर किये, जो इसी भाँति हैं।

(1) प्रश्न-ऐसा कौन-सा धर्म है, जिसकी धर्म पुस्तक सब मनुष्यों की बोलचाल और प्राकृत नियमों को सिद्ध करने में प्रबल हो?

उत्तर-मत-सम्बन्धी सारी पुस्तकें हठधर्मी से भरी पड़ी हैं। इसलिए उनमें विश्वास के योग्य एक भी पुस्तक नहीं है। मेरी सम्मति में जो पुस्तक ज्ञान-सम्बन्धी है, वही सत्य है। उसमें पक्षपात नहीं हो सकता। ऐसी ही पुस्तक का सृष्टिक्रम के अनुकूल होना सम्भव है। मेरे आज तक के अन्वेषण में वेद ही ऐसी पुस्तक है। वह किसी एक देश की भाषा में नहीं है। वह ज्ञानमय है और उसकी भाषा भी ज्ञान भाषा है। इसलिए वेद पर ही निश्चय करना चाहिए।

(2) प्रश्न-क्या वेद, मत की पुस्तक नहीं है?

उत्तर-नहीं, वह ज्ञान की पुस्तक है।

(3) प्रश्न-मत का आप क्या अर्थ करते हैं?

उत्तर-पक्षपातयुक्त मन्तव्यों के समुदाय को मत कहते हैं।

(4) प्रश्न-हमारे पूछने के अभिप्राय का उत्तर आपने वेद बताया है, सो क्या वेद में वे सब गुण पाये जाते हैं?

उत्तर-हाँ, पाये जाते हैं।

(5) प्रश्न-आपने कहा कि वेद किसी देश की भाषा में नहीं है। जो भाषा किसी भी देश की नहीं है, वह सब भाषाओं पर कैसे प्रबल हो सकती है?

उत्तर-जो देश विशेष की भाषा होती है, वह व्यापक नहीं हो सकती।

(6) प्रश्न-जब वह भाषा किसी देश की नहीं है तो वह सब पर कैसे प्रबल हो सकती है?

उत्तर-जैसे आकाश किसी एक स्थान का नहीं है, परन्तु सर्वत्र व्यापक है, ऐसे ही वेदों की भाषा देश-भाषा न होने से सब भाषाओं में व्यापक है।

(7) प्रश्न-यह भाषा किसकी है?

उत्तर-ज्ञान की।

(8) प्रश्न-इसका बोलने वाला कौन है?

उत्तर-इसका बोलने वाला सर्वदेशी परब्रह्म है।

(9) प्रश्न-इसका सुनने वाला कौन है?

उत्तर-इसके सुनने वाले अग्नि आदि चार ऋषि सृष्टि के आदि में हुए हैं। उन्होंने परमात्मा से सुनकर सब मनुष्यों को सुनाया है।

(10) प्रश्न-ईश्वर ने यह भाषा उन्हीं को क्यों सुनाई? क्या वे इस बोली को जानते थे?

उत्तर-वे चारों सर्वोत्तम थे। ईश्वर ही ने उनको तत्काल भाषा का भी ज्ञान करा दिया था।

(11) प्रश्न-आप इसमें क्या युक्ति देते हैं?

उत्तर-कारण के बिना कार्य नहीं होता। यही युक्ति है और ब्रह्मादि ऋषियों की साक्षी है।

(12) प्रश्न-भूमण्डल भर के सारे मनुष्य क्या एक ही कुल के हैं?

उत्तर-भिन्न-भिन्न कुलों के हैं। आदिसृष्टि में उतने ही जीव मनुष्य-शरीर धारण करते हैं, जितने गर्भ सृष्टि में शरीर धारण करने के योग्य होते हैं। वे जीव असंख्य होते हैं।

(13) प्रश्न-इस पर कोई युक्ति दीजिये।

उत्तर-अब भी सब अनेक माँ-बाप की सन्तान हैं।

(14) प्रश्न-जो आकृतियाँ मनुष्य की हैं, उनके तन क्या एक ही प्रकार के बने थे?

उत्तर-आदि में मनुष्यों के रङ्ग और लम्बाई-चौड़ाई आदि का भेद अवश्य था।

(15) प्रश्न-सृष्टि की उत्पत्ति कब हुई?

उत्तर-सृष्टि को उत्पन्न हुए एक अरब छियानवे करोड़ और कई लाख वर्ष बीत गये हैं।

(16) प्रश्न-आप किसी मत के नियमों का पालन करते हैं कि नहीं?

उत्तर-जो धर्म ज्ञानानुकूल है, मैं उसके सारे नियमों का पालन करता हूँ।

(17) प्रश्न-क्या उपादान कारण अनादि है? आप कितने पदार्थों को अनादि मानते हैं?

उत्तर-उपादान कारण अनादि है। जीवात्मा, परमात्मा और प्रकृति, ये तीन पदार्थ अनादि हैं। इनका परस्पर संयोग-वियोग कर्म और कर्मों का फल-भोग प्रवाह से अनादि है।

(18) प्रश्न-जो वस्तु हमारी बुद्धि की सीमा से बाहर है, हम उसे अनादि कैसे मान लें?

उत्तर-जो वस्तुएँ नहीं हैं, वे कभी भी नहीं हो सकतीं। जो हैं, वे पहले भी थी और आगे को भी बनी रहेंगी।

(19) प्रश्न-वेद यदि ईश्वर का बनाया हुआ होता, तो सूर्यादि की भाँति सारे संसार के सब मनुष्यों को इससे लाभ पहुँचता?

उत्तर-वेद पवित्र, सूर्यादि पदार्थों की तरह ही सबको लाभ पहुँचाता है। सारे धर्मों के ग्रन्थों और विद्या की पुस्तकों का कारण वेद ही है। यह सबसे पहले है, इसलिए जितने शुभ विचार और ज्ञान की वार्ताएँ दूसरे ग्रन्थों में पाई जाती हैं, वे सब वेद से ली गई हैं। हानिकारक कथायें उन ग्रन्थों के कर्त्ताओं की अपनी मनघड़न्त हैं। वेद में किसी का खण्डन-मण्डन नहीं पाया जाता, इसलिए वह पक्षपातरहित है जैसे सृष्टिविद्या वाले सूर्यादि से अधिक लाभ लेते हैं, ऐसे ही वेद का अनुशीलन करने वाले वेद से भी अधिकाधिक उपकार प्राप्त करते हैं।

इस लेख से महर्षि दयानन्द की वेदों के प्रति आस्था एवं ज्ञान का परिचय होता है। इसीलिए महर्षि ने आर्यसमाज के दस नियमों में तीसरा नियम "वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठपुरुषों) का परम धर्म है" बनाया है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है जिसे ईश्वर ने सृष्टि के आदि ने चार ऋषियों, जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा थे, उनसे चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं क्रमशः कहलवाए। इनमें बताया गया है कि मनुष्य अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए उसे क्या काम करने चाहियें और क्या काम नहीं करनी करने चाहियें।

मनुष्य, वेदानुसार चलने से ही अपना तथा दूसरों का जीवन सुखी व आनन्दमय बना सकता है और अन्त में मृत्यु के बाद मोक्ष प्राप्त कर सकता है। जहाँ एक लम्बी अवधि तक ईश्वर के सान्निध्य में रहते हुए परम आनन्द को प्राप्त करता है।

लेखक ने कविता के रूप में महर्षि को वेदों का उद्धारक बताते हुए वेदों की महत्ता को इस प्रकार प्रकट किया है।

महर्षि दयानन्द ने इंसानों को,
बेहतर जीना सिखा दिया।
खोलकर बन्द स्त्रोतों को,
पुनः वेदामृत पीना सिखा दिया॥
पड़ा हुआ था वह अज्ञान,
अज्ञान अविद्या के अन्धेरे में,
घूम रहा था वह, धूर्त्त पाखण्डियों के डेरे में,
कर्महीन बना हुआ था, पड़ा भाग्य के फेरे में,
मृत जीवन जी रहा था, निराशाओं के घेरे में,
वेद सूर्य को चमका, अज्ञान,
अन्धविश्वास व पाखण्ड को मिटा दिया।
महर्षि दयानन्द ने इंसानों को,
बेहतर जीना सिखा दिया।
खोलकर बन्द स्त्रोतों को,
पुनः वेदामृत पीना सिखा दिया॥

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

विद्यालय-विभाग (हरिद्वार) उत्तराखण्ड-249404

प्रवेश-सूचना

आधुनिक सुविधाओं सहित आवासीय (10+2) गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय-विभाग हरिद्वार में सत्र 2013-14 हेतु कक्षा 01 से 9 व 11 तक प्रवेश प्रारम्भ।

वैदिक संस्कारों पर आधारित एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यक्रम सभी आधुनिक विषयों के साथ छात्रों के सर्वांगीण विकास की शिक्षण संस्था।

विज्ञान वर्ग में P.C.M. एवं P.C.B. एवं वाणिज्य वर्ग तथा कला वर्ग।

हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम।

प्रवेश तिथि = 01 जुलाई 2013 से 20 जुलाई 2013 तक

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें—

सम्पर्क सूत्र : 9927016872, 9412025930, 9412024149, 9690679382, 9927084378, वेबसाइट : www.gurukulkangrividyalaya,org

—जयप्रकाश विद्यालंकार, सहायक मुख्याधिष्ठाता

महर्षि दयानन्दकृत वेदभाष्य में दण्ड-व्यवस्था का स्वरूप

❑ सत्यदेव निगमालंकार 'चतुर्वेदी' प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

दण्ड शब्द का प्रयोग दमन के अर्थ में किया जाता है। निरुक्तकार यास्क ने 'दण्ड' शब्द की व्युत्पत्ति धारणार्थक 'दद्' धातु मानी है। दण्ड द्वारा ही सारी प्रजा धारण की जाती है, बिना दण्ड के राष्ट्र का उच्छेद हो जावे। धारण अर्थ में 'दद' धातु के प्रयोग की पुष्टि के लिये यास्क 'अक्रूरो ददते मणिम्' वचन किसी प्राचीन संस्कृत-ग्रन्थ से उद्धृत करते हैं। हरिवंशपुराण के ३४वें अध्याय से ज्ञात होता है कि 'अक्रूर राजा' की माता गान्दिनी तथा पिता श्वफल्क था। इसके पितृव्य श्रीकृष्ण थे। गान्दिनी काशी के राजा की पुत्री थी। वह अक्रूर स्यमन्तक नामी अतिसुन्दर मणि को धारण करता था। औपमन्यव निरुक्तकार का मत है कि इस दण्ड के द्वारा दुष्टों का दमन करने से, इसे दण्ड कहा जाता है। इस प्रकार दम् धातु से औणादिक ड प्रत्यय करने पर भी 'दण्ड' शब्द सिद्ध होता है। दण्ड शब्द का दमनार्थक लोक में प्राय: प्रयोग होता है, जैसे 'दण्डं अस्य आकर्षत' इस अदान्त को दण्ड दो, तभी यह सीधा होगा-यह निन्दार्थ में प्रयोग है धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों में भी 'दण्ड' शब्द का प्रयोग धारण तथा दमन के अर्थ में प्राप्त होता है। गौतम धर्मसूत्र में दमन करने के कारण ही दण्डविधि को दण्ड कहा गया है, जिसके द्वारा निरङ्कुश लोगों को वश में किया जाता है। मनु के अनुसार प्राणियों की रक्षा के लिये सभी जीवों के रक्षक ब्रह्मतेजोमय दण्ड को ईश्वर ने अपने धर्मपुत्र में पैदा किया है। दण्ड ही प्रजा का शासक है दण्ड ही रक्षा करता है, दण्ड ही सभी के सोने पर जागता है। इसलिये विद्वान् दण्ड को ही धर्म कहते हैं। कुलूकभट्ट ने धर्म का कारण होने से ही दण्ड को धर्म नाम से लिखा है। महर्षि दयानन्द ने दण्ड पद का अर्थ करते हुए लिखा है-

दाम्यन्त्युपशाम्यन्त्यनेन स दण्ड: यष्टिभेदो वा।।

यहाँ पर भी 'दण्ड' पद का अर्थ दमन उपशमन या यष्टिभेद में गृहीत किया गया है। स्ववेदभाष्य में अनेकश: स्थलों पर प्रशासन व्यवस्था को सुचारू-रूप प्रदान करने हेतु महर्षि दयानन्द सरस्वती ने दण्ड शब्द का प्रयोग किया है। प्रजाजनों और सैनिकों को अपने नियमों से विचलित होने पर न्यायाधीश कठोर दण्ड देवे। मनुष्यों को शिक्षा, विद्या और सेना के बल से पराया धन हरने वाले धूर्त्तों और चोरों को सब प्रकार से मारना चाहिये, दूर फेंकना चाहिये और निरन्तर बन्द रखना चाहिये। ऐसा करके राजधर्म और प्रजा के मार्गों को नि:शङ्क और निर्भय बनाना चाहिये। जैसे परमेश्वर दुष्टों को उनके कर्मों के अनुसार शिक्षा देता है, वैसे ही हमें भी इन सबको शिक्षा, दण्ड और वेद के द्वारा सज्जन बनाना चाहिये। न्यायाधीश आदि मनुष्यों को, किसी अपराधी अथवा चोर को दण्ड दिये विना नहीं छोड़ना चाहिये; नहीं तो प्रजा पीड़ित होती रहेगी। इसीलिये प्रजा की रक्षा के लिये दुष्ट कर्म करने वाले पिता, आचार्य, माता, पुत्र तथा मित्र आदि को भी सदैव अपराध के अनुसार दण्ड देना चाहिये।

सभाध्यक्ष आदि राजपुरुषों को और प्रजाजनों को, जैसे अग्नि वन आदि को जला डालते हैं वैसे दुष्टाचारी प्राणियों को विनष्ट करना चाहिये। इस प्रकार प्रयत्न करते हुए निरन्तर प्रजा की रक्षा करनी चाहिये। जैसे सौत स्त्रियाँ अपने पति को क्लेश पहुँचाती हैं, अथवा जैसे अपने प्रयोजन में सफल या असफल होते हुए भी चूहे पराये द्रव्यों को विनष्ट करते हैं और जैसे व्यभिचारिणी वेश्या आदि स्त्रियाँ विद्युत के समान चमचमाती दिखती हुई कामी मनुष्य के उपस्थेन्द्रिय के द्वारा धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष के अनुष्ठान में बाधक होने के कारण, उस कामी मनुष्य को सताती हैं, जैसे जो डाकू आदि लोग झूठे निश्चय, कार्य और वचन से हमें क्लेश पहुँचाते हैं, उनको भलीभाँति दण्डित करके इनका और हमारा न्यायाधीश को पालन करना चाहिये। ऐसे निश्चय किये विना निरन्तर राज्य के ऐश्वर्य का योग अधिक नहीं हो सकता है। दण्ड देकर दुष्टों को सचेत किया जाता है। जो बुद्धिमान् लोग हिंसा भाव को त्याग कर अजातशत्रु बन गये हों, वे दुष्टों को पाशों से बाँधें। उनके द्वारा की गयी इस रक्षा-विधि से सब सुखी होवें।

यदि अध्यापक विद्यार्थियों को और राजा अमात्यों एवं प्रजाजनों को भृकुटि टेढ़ी करके प्रेरणा देवें तो वे सुसभ्य, विद्वान् और धार्मिक बन जाते हैं यह भी दण्ड की एक प्रक्रिया ही है। दुष्टों को दण्डित किये विना सज्जनों को आनन्द नहीं आ सकता। अपराधी को दण्डित किये विना न छोड़ें। प्रजाजनों और प्राणियों के सो जाने पर भी जिस राजा का दण्ड जागृत रहता है, वह अभयदाता कहीं से भी भयभीत नहीं होता है। जो विपरीत कर्म के द्वारा प्रजाओं में कुचेष्टा करता है, उसे सदा बाँधकर और शस्त्रों से पीड़ित कर सब ओर से बन्द कर देना चाहिये। जो पुरुष और स्त्रियाँ व्यभिचार करें, उन्हें कठोर दण्ड देकर नष्ट कर देना चाहिये। जब-जब दुष्ट लोग श्रेष्ठों को सतावें, तब-तब सब अधार्मिकों को प्रचुर दण्ड दिया जावे। जो प्रजा को दूषित करने वाले हों, उन्हें सदैव दण्ड दें और जो श्रेष्ठ आचरण वाले हों, उनका मान होना चाहिये। जैसे धान स्वच्छ करने वाला, धान को कूटकर और भूसे को अलग करके अन्न को ले लेता है और जैसे पशु खुरों से धान आदि को खाँडता है, वैसे ही राजा दुष्ट मनुष्यों को प्रचुर दण्ड दे।

जो कुशिक्षा के द्वारा मनुष्यों को दोषयुक्त करते हैं और उन्हें निंदा तथा विषयासक्ति में प्रवृत्त करते हैं, उनको न्यायाधीश प्रचुर दण्ड दे। जो न्याययुक्त आज्ञा के विरुद्ध प्रजाएँ हों, उन्हें दण्ड देकर शान्त करना चाहिये। इस न्याययुक्त आचरण से, सब लोग सौ वर्ष की आयु के होते हैं। जो बिना किये ही किसी पर अपराध लगाते हैं, उन्हें राजा नित्य दण्ड दे। जो धर्म के मार्ग को छोड़कर उल्टे मार्ग पर चलते हैं, उन्हें राजा नित्य दण्ड देवे। जो डाकू आदि चोर, दुष्टवचन वाले, झूठ बोलने वाले तथा व्यभिचारी मनुष्य हों, उनको अग्नि के द्वारा दग्ध करना आदि उग्र दण्डों से प्रचुर ताड़ना देकर वश में करना चाहिये। राजपुरुषों को जो गौ आदि की हिंसा करने वाले पशु तथा मनुष्य और जो चोर आदि हों, उन्हें अनेक प्रकार के बन्धन, ताड़न और विनाश के द्वारा वश में करना चाहिये। जो राजकर्मचारी शत्रुओं के निवारण में यथाशक्ति प्रयत्न नहीं करते हैं उन्हें, अच्छी प्रकार दण्ड देना चाहिये। जिस-जिस अङ्ग से मनुष्य कुचेष्टा करते हैं उस उस अङ्ग के ऊपर दण्डदान के द्वारा राजधर्म की निरन्तर उन्नति राजा को करनी चाहिये। महर्षि दयानन्द ने स्ववेदभाष्य में अनेक स्थलों पर लिखा है कि पराये पदार्थ हरने वाले, कुटिल स्वभाव वाले, अपनी विजय चाहने वाले डाकुओं को वेगपूर्वक ललकार कर, पर्वत तथा वन आदि में बनाये हुए उनके घरों को गिराकर, उनको बाँधकर, निन्दित कर्म करने वाले, द्वेष करने वाले को दण्ड देकर सूने स्थान में बन्द कर दे, अन्धा सा बनाकर कारागृह में डाल दे।

किन्तु साथ में यह भी लिखा है कि हिंसक, चोर और लम्पट मनुष्यों को कारागृह में अन्धा-सा बनाकर तथा उपदेश और व्यावहारिक शिक्षा के द्वारा उन्हें धार्मिक बनाकर धर्म और विद्या के प्रेमी बनावे तथा पथ्य और औषधिप्रदान के द्वारा उन्हें नीरोग करे।

प्रशासन को सुचारू स्वरूप के लिये स्वामी जी ने लिखा कि कोई डाकू, कोई कपटपूर्वक, अपहरण करने वाले, कोई बेहोश करके अथवा मोहित करके पराये पदार्थ ले लेने वाले, कोई घूस लेने वाले, कोई रात्रि में सुरंग लगाकर जो पराये पदार्थों का हरण करते हैं, विभिन्न बिक्री स्थलों के वासी जो हाट बाजारों में छल से पराये पदार्थों को हरते हैं, जो अन्यायपूर्वक शुल्क लेने वाले, कर्मचारी बनकर स्वामी के पदार्थों को हरते हैं, जो छल-कपट के द्वारा पराये राज्यों को अपना बना लेते हैं, जो धर्मोपदेश के बहाने से मनुष्यों को भ्रमित करके तथा गुरु बनकर शिष्यों के पदार्थों का हरण करते हैं, जो वकील होते हुए मनुष्यों को आपस में लड़ाकर उनके पदार्थों को हरते हैं और जो न्यायासन पर बैठकर अनुचित शुल्क आदि लेकर अथवा मित्रभाव से अन्याय करते हैं-इत्यादि जितने हैं, उन सबको चोर समझना चाहिये। इनका सब उपायों से निवारण करके मनुष्यों को धर्मपूर्वक राज्यशासन करना चाहिये।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदभाष्य के अन्तर्गत स्थान-स्थान पर दण्ड-व्यवस्था के स्वरूप को दिखाया है।

(**नोट**—लेखक ने अपने लेख में दण्ड—व्यवस्था सम्बन्धी ३७ उद्धरण वेदों व मनुस्मृति आदि ग्रन्थों से दिये हैं, जिन्हें स्थानाभाव से नहीं दिया जा सका है। —संपादक)

संपर्क-श्रद्धानन्द वैदिक शोध संस्थान गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

शोक-समाचार

आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय (वीर भवन) पानीपत की तदर्थ समिति के सदस्य श्री भलेराम सुपुत्र श्री मांगेराम गाँव-पो० शाहपुर जिला पानीपत का दिनांक 22.1.2013 को स्वर्गवास हो गया। वे आर्यसमाज के कार्यों में बहुत सहयोग देते थे। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं उनके परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदाने करे।

—राजेन्द्रसिंह जागलान, इसराना (पानीपत)

भजन (करौंथा काण्ड)

टेक-हे सुन आर्यो की गाथा,
वर्णन सब इतिहास बताता।
बहादुर वीर जहान में, तेजस्वी,
ओजस्वी और भरपूर ज्ञान में॥

1. एक पापी रामपाल से इनका पड़ग्या वास्ता, हाँ पड़ग्या वास्ता।
था चरित्रहीन दुराचारी, भला कौन ना जानता, भला कौन ना जानता।
हे आर्यो ने देखा इसको, लागी आग बदन में सबको।
चाल आगी पहचान में, बस फिर क्या था पहुँचे सारे डेरे की खान में॥
2. संरक्षक थे बलदेव जी और सारे थे पद-अधिकारी, थे पद-अधिकारी।
संन्यासी-वृन्द, आचार्य, गुरुकुल के ब्रह्मचारी, गुरुकुल के ब्रह्मचारी।
जत्था चाला डट-डट के, मर जावांगे कट-कट के।
शब्द गूँजे आसमान में, खाल करवावांगे डेरा न्यू बोले ऐलान में॥
3. फिर तैयारी करके जोर-शोर की, पहुँचे ग्राम-ग्राम में, पहुँचे ग्राम-ग्राम में।
क्रान्ति का बिगुल फूँक दिया, नौजवानों की जान में, नौजवानों की जान में।
लड़ना मर्यादा में रहकर, थक लिए बलदेव जी कहकर।
जब उतरे मैदान में, होश नहीं खोना जवानो, कहा अपने ब्यान में॥
4. फिर करौंथा ग्राम के नर-नारी, दंगल में आ डटग्ये, दंगल में आ डटग्ये।
आस-पास के गाँव सारे, खचाखच भरगे, खचाखच भरगे।
माहौल होगा महाभारत का, हरण बलदेव जी पारथ का।
संभाले कौन लगाम ने, ऐसे हालत हो गये सब चाहवें कुर्बान ने।
5. फिर करौंथा गाँव की बहू-बेटी ने जौहर दिखलाया, जौहर दिखलाया।
बन झाँसी की रानी, ना पीछे कदम हटाया, ना पीछे कदम हटाया।
लेकर हाथ में हठोरी, चाली शेरनी किशोरी,
लिपटी जा गिरबान में, आश्रम खाली करवावांगे न्यू बोली बहन ने।
6. जब डेरे की तरफ बढ़े तो बरसा दी गोली दनादन बरसा दी गोली।
प्रशासन ने लिखवा दी, म्हारे खून की होली, म्हारे खून की होली।
हे संदीप सपूत बेटा, बहादुर नौजवान ढेठा।
अड़ग्या सीना तान के, हे प्रशासन ने जुल्म करा, दिया मान जान ने।
7. फिर रूप बदलग्या आन्दोलन का, मचगी हाहाकार, मचगी हाहाकार।
चूची-बच्चा जंग में बड़ग्या, पड़गी थी किलकार, पड़गी थी किलकार।
खून उबलग्या सबका भाई, अड़ग्ये मरण नै लोग लुगाई।
देख के हो गये हैरान वे, ऐसा जज्बा ना देखा पूरे हिन्दुस्तान में।
8. फिर प्रशासन को कूच, आगे बढ़े कर्णधारी, आगे बढ़े कर्णधारी।
ललकारा पापी को तू आज्या, नीच दुराचारी, नीच दुराचारी।
पर वे तैयार खड़े थे अड़के, मारे गोली वे बेधड़के।
बदलग्या जंग घमसान में, वीर आर्य अड़े रहे होगे बलिदान में।
9. उदयवीर, संदीप, प्रोमिला, प्रमाण थे इनके, प्रमाण थे इनके।
बलियाणा, शाहपुर और करौंथा, ग्राम थे इनके, ग्राम थे इनके।
हे दिया बना अमर इतिहास, दुनिया रटा करेगी खास।
इनके इस अरमान ने और साथ में मिटा देंगे उस बेईमान नै।
10. कितने टूटे, कितने फटे, किस-किसके नाम गिनूँ, किसके नाम गिनूँ।
हे सुमित्रा इसे बहादुर बेटा, बेटी मैं जनूँ, बेटी मैं जनूँ।
यू आन्दोलन जोर पकड़ग्या, म्हारा सारा भय लिकड़ग्या।
मरांगे अपनी आन पै, कुर्बानी ना खाली जागी, भरोसा है भगवान् पर।

—सुमित्रा आर्या भजनोपदेशिका, उपमंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

नोट-हमारा प्रत्येक आन्दोलन अहिंसक रहा है। आर्यो का इतिहास सत्याग्रह का है न कि हिंसा का।

पाखण्ड-खण्डन आर्य महासम्मेलन

एक दिवसीय जिला स्तरीय पाखण्ड-खण्डन आर्य महासम्मेलन दिनांक 16 जून 2013 रविवार सुबह 7.30 से 11.30 बजे तक पुरानी अनाजमण्डी सफीदों (जींद) में वेदप्रचार मण्डल जींद एवं आर्यसमाज सफीदों के तत्त्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

—प्रो. ओमकुमार, सभा-उपप्रधान

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज कनीना जिला महेन्द्रगढ़	8 से 9 जून 2013
2.	36वाँ युवक निर्माण प्रशिक्षण शिविर डी.ए.वी. स्कूल, निकट श्रद्धानन्द पार्क, न्यू कालोनी पलवल	10 से 16 जून 2013

—प्राचार्य अभय आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

ग्रीष्म अवकाश में आर्य वीर दल हरयाणा की ओर से शहीद सोनू, सन्दीप कुण्डू एवं उपाचार्य उदयवीर की स्मृति में आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर

क्र०	स्थान	सम्पर्क नं०	दिनांक
1.	दयानन्दमठ रोहतक	9215212533	03.06.13 से 09.06.13
2.	आर्य कन्या पाठशाला जैकमपुरा गुड़गाँव	9312979886	02.06.13 से 09.06.13
3.	ओ३म् योग संस्थान पाली फरीदाबाद	9312979886	02.06.13 से 09.06.13
4.	दयानन्द स्कूल, पलवल	9416773617	03.06.13 से 09.06.13
5.	गुरुकुल कालवा जिला जीन्द	9813265422	09.06.13 से 16.06.13
6.	बालाजी पब्लिक स्कूल, वल्लभगढ़	9891368474	10.06.13 से 16.06.13
7.	सरती देवी धर्मशाला बेरला, जिला भिवानी	9896176185	24.06.13 से 30.06.13
8.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र राष्ट्रीय शिविर	9466436220	03.06.13 से 16.06.13

शहीद प्रोमिला देवी की स्मृति पर आर्य वीरांगना शिविर

1.	आर्यसमाज सैक्टर-4, गुड़गाँव	9312979886	02.06.13 से 09.06.13
2.	वैदिक भक्ति आश्रम, रोहतक	9215212533	17.06.13 से 23.06.13
3.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र राष्ट्रीय शिविर	9466436220	17.06.13 से 23.06.13

—वेदप्रकाश आर्य, मन्त्री

आत्मिक शांति के लिये शुद्धता से करें आह्वान
प्रसन्न हो आशीर्वाद देंगे भगवान

शुद्ध एम डी एच हवन सामग्री

शुभ दिनों, शुभ कार्यों एवं पावन पर्वों में शुद्ध घी के साथ, शुद्ध जड़ी-बूटियों से निर्मित एम डी एच हवन सामग्री का प्रयोग कीजिये। शुद्धता में ही पवित्रता है। जहां पवित्रता है वहां भगवान का वास है, जो एम डी एच हवन सामग्री के प्रयोग से सहज ही उपलब्ध है।

अलौकिक सुगंधित अगरबत्तियां

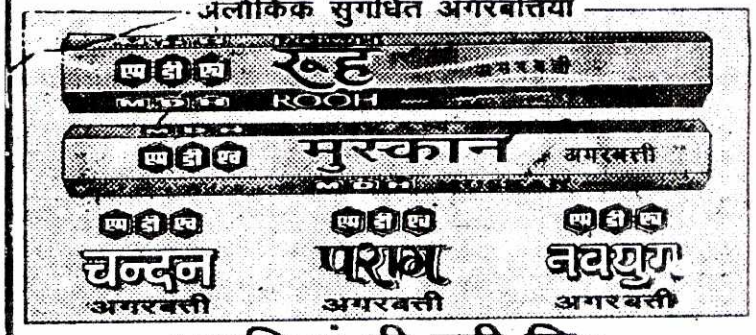

महाशियां दी हट्टी लि०
एच डी एच हाउस, 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-15 फोन : 5937987, 5937341, 5939609
शाखाएं : • दिल्ली • गाजियाबाद • गुड़गांव • कानपुर • कलकत्ता • नागौर • अमृतसर

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओमप्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिखीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

आर्य-संसार

श्रद्धाञ्जलि समारोह सम्पन्न

गुरुकुल आर्यनगर जिला हिसार के संस्थापक स्वर्गीय स्वामी देवानन्द सरस्वती की 28वीं श्रद्धाञ्जलि समारोह 20.5.2013 को विधिवत् सम्पन्न हुआ। प्रात: आठ बजे गुरुकुल आर्यनगर के उपाचार्य श्री राजीव के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने मन्त्रपाठ किया। ब्र० दीपकुमार आर्य तथा वानप्रस्थ अतरसिंह स्नेही ने यजमान का स्थान ग्रहण किया।

प्रात: 10 बजे स्वामी सर्वदानन्द कुलपति गुरुकुल धीरणवास की अध्यक्षता में श्रद्धाञ्जलि समारोह सम्पन्न हुआ। आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री ने मंच का संचालन किया तथा आचार्य जी ने स्वामी देवानन्द जी के प्रेरणास्रोत संस्मरण सुनाए। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों तथा आर्यसमाज माडल टाउन हिसार के पुरोहित पं० सूर्यदेव ने ईश्वरभक्ति के भजन रखे। गुरुकुल आर्यनगर के प्रधान स्वामी सुमेधानन्द ने अनुशासन व वैदिक शिक्षा के महत्त्व पर प्रकाश डाला। सभा पुस्तकाध्यक्ष वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही ने स्वामी दयानन्द के जीवन कार्यों पर प्रकाश डाला। साथ में आर्यसमाज के संगठन को मजबूत बनाने पर बल दिया। इस अवसर पर पं० रामजीलाल आर्य पूर्व सांसद्, ब्र० दीपकुमार आर्य, श्री रामकुमार आर्य प्रधान वेदप्रचार मण्डल, श्री सीताराम आर्य, श्री इन्द्रदेव शास्त्री आदि ने भी स्वामी जी को श्रद्धाञ्जलि दी। मंच पर आचार्य मानसिंह पाठक, सत्यप्रकाश मित्तल, कर्नल ओमप्रकाश आर्य, फूलसिंह आर्य, मा० रणधीर सिंह आर्य, निहालसिंह दांगी, श्री कृष्णकुमार आर्य, श्री भूपेन्द्र सिंह गंगवा उपस्थित थे। शान्तिपाठ के बाद सब ने ऋषिलंगर में भोजन किया।

—लालबहादुर एडवोकेट, मन्त्री, गुरुकुल आर्यनगर जिला हिसार

नि:शुल्क चिकित्सा जाँच शिविर का आयोजन

आर्यसमाज बीकानेर-गंगायचा अहीर जिला रेवाड़ी (हरयाणा) द्वारा विगत 28 अप्रैल 2013 को अपने प्रांगण में एक नि:शुल्क चिकित्सा जाँच शिविर का आयोजन डॉ० महेन्द्र कुमार के संरक्षण में हुआ। प्रात: 10 बजे से दोपहर बाद 2 बजे तक लगभग 250 मरीजों के स्वास्थ्य की नि:शुल्क जाँच की गई। इसके अतिरिक्त हृदय की नसों में रुकावट, शुगर, पीलिया, रक्तचाप, सीने में दर्द व टाइफाइड आदि रोगों से ग्रस्त रोगियों को भी मुफ्त परामर्श व दवाइयाँ वितरित की गई। शिविर में कत्याल अस्पताल एवं क्रिटीकल केयर सैंटर रेवाड़ी के तत्त्वावधान में डॉ० पुनीत कत्याल व अन्य विशेषज्ञ चिकित्सकों का पूर्ण योगदान रहा। इससे पहले 20 फरवरी 2013 को आर्यसमाज ने नाक, कान व गला आदि रोगों से पीड़ित रोगियों के परीक्षण व इलाज हेतु मैडिकल कॉलेज अस्पताल, बुढ़ेड़ा (गुड़गाँव) के विशेषज्ञ डाक्टरों द्वारा शिविर लगाया था।

जन्म दिवस पर यज्ञ का आयोजन

ग्राम गंगायचा अहीर-बीकानेर, जिला रेवाड़ी (हरयाणा) में दिनांक 3 मई 2013 को श्री धर्मवीर नम्बरदार, मंत्री आर्यसमाज बीकानेर के सुपौत्र चि० संदीप आर्य सुपुत्र श्री संजीव कुमार के 9वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा मा० दयाराम आर्य, संयोजक पतञ्जलि योग समिति जिला रेवाड़ी तथा श्री महादेव आर्य ने पुरोहित के रूप में यज्ञ सम्पन्न करवाया। यज्ञ के उपरान्त प्रख्यात हास्यरस कवि 'श्री हलचल हरियाणवी' ने वैदिक सिद्धान्तों के अनुरूप जीवन यापन पर प्रकाश डाला तथा संस्कारों के महत्त्व को बताते हुए अपनी चिर-परिचित काव्यशैली में संदीप आर्य के अच्छे स्वास्थ्य व दीर्घ आयु की कामना की। मा० दयाराम आर्य ने जीवन में योग व प्राणायाम के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए 10 आसनों का अभ्यास भी करवाया। यज्ञ पर सर्वश्री खेमराम, सूबेदार चन्द्रपाल, एस.आर. यादव डी.एस.पी. बलजीत सिंह, नरेश पंच, लखेन्द्र डी.पी.ई., नरेश कुमार, रामचन्द्र सोनी, नरेन्द्र तथा श्रीमती चन्द्रकला, मंजू देवी, धुप्पा देवी, रोशनी, अंगूरी देवी व राजबाला आर्या आदि ने संदीप आर्य को आशीर्वाद दिया। शान्तिपाठ के बाद जलपान के साथ आयोजन सम्पन्न हुआ।

—धर्मवीर आर्य मंत्री

करौंथा गोलीकाण्ड की भर्त्सना, मृतकों की आत्मा की शान्ति हेतु यज्ञ

दिनांक 14.5.2013 को प्रात: आर्यसमाज मन्दिर में करौंथा गोली-काण्ड में शहीद हुए तीन बलिदानियों की आत्मा की शान्ति के लिए शान्तियज्ञ किया गया। रविवार 12.5.2013 को करौंथा में शांतिपूर्ण, अहिंसक तथा निहत्थे प्रदर्शनकारियों पर गोलियाँ चलाने की घोर भर्त्सना की गई। इस गोलीकाण्ड में तीन व्यक्ति शहीद हुए जिनमें करौंथा निवासी एक महिमा भी शामिल है और सैकड़ों लोग बुरी तरह से घायल हुए हैं। यह अत्यन्त निंदनीय कार्य है। इस शान्तियज्ञ में आर्यसमाज, आर्य वीर दल, भारत स्वाभिमान न्यास, पतंजलि योग समिति तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं के प्रतिष्ठित सभासद् सम्मिलित हुए। सभी ने एकमत से इस घटना को दुर्भाग्यपूर्ण तथा दु:खद घटना बताया। इस सतलोक आश्रम में अवांछनीय तत्त्वों ने कब्जा कर लिया है, ऐसे तत्त्वों से आश्रम को खाली करवाने का प्रस्ताव पारित किया गया। इस शांतियज्ञ में प्रो० देवदत्त आर्य, पं० कुंवरपाल शास्त्री, डॉ० हरिश्चन्द्र लाम्बा, राजेन्द्र कुमार वर्मा, चौ० तारीफ सिंह, रणधीर सिंह योगार्थी, श्याम सुन्दर आर्य, मा० जयनारायण आर्य, रामकिशन आर्य, चौ० सुकर्मपाल आर्य, डॉ० रामफल मलिक, डॉ० चन्द्रप्रकाश चावला, नारायणदास कथूरिया, सेवाव्रती प्रतापसिंह पालड़ी, सेवाव्रती बिमला देवी, रामप्रताप गुप्ता आदि उपस्थित थे। **—डॉ० हरिश्चन्द्र लाम्बा, मन्त्री**

करौंथा के ढोंगी रामपाल द्वारा धार्मिक भावनाओं को भड़काने और अराजकता फैलाने के विरोध में आर्यसमाज मॉडल टाउन द्वारा पारित प्रस्ताव

आर्यसमाज मॉडल टाउन यमुनानगर द्वारा अन्तरंग सभा की एक आपातकालीन सभा 13.5.2013 को बुलाई गई। इस सभा में करौंथा गाँव के ढोंगी रामपाल द्वारा धार्मिक भावनाओं को भड़काने और तथाकथित अपने चेलों द्वारा अराजकता फैलाने के विषय में विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। यद्यपि ईश्वरीय ज्ञान वेदों को U.N.O. में भी मान्यता दी गई है, परन्तु संस्कृत का शुद्ध ज्ञान न होने के कारण और स्वार्थवश रामपाल लोगों में भ्रम फैलाता रहता है और समाज में वैर-भाव को बढ़ावा देता है। जिस प्रकार पुलिस ने रविवार 12.5.2013 को आर्यजनों को करौंथा में हवन करने नहीं दिया और अत्यधिक बल का दुरुपयोग किया गया, इसकी भी कड़े शब्दों में निन्दा की गई।

रामपाल के ऐसे प्रयत्नों की सभी सदस्यों और अधिकारियों ने घोर भर्त्सना की। कुछ वर्ष पूर्व अनाप-सनाप और अनर्गल प्रचार करने के कारण इसे यमुनानगर से रातोंरात अपना बोरिया बिस्तर बांधकर भागना पड़ा था। यदि यह Self-Styled, तथा-कथित गुरु ऐसे ही समाज की धार्मिक भावनाओं से खेलता रहा और असामाजिक तत्त्वों को प्रोत्साहन करता रहा तो इससे बहुत बड़े दुष्परिणाम निकल सकते हैं। हमारी हरयाणा सरकार से प्रार्थना है कि शीघ्र ही उचित कार्यवाही द्वारा इस पर रोक लगाई जाये। **—रमेशचन्द्र पाहूजा, प्रधान**

1. नवान्न यज्ञ व वेदप्रचार

दिनांक 10 मई 2013 को ग्राम मदीना जिला रोहतक में श्री राजसिंह द्वारा नवान्न यज्ञ करवाया गया जिसमें आचार्य वेदमित्र जी ने ऋषि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट नवान्न यज्ञ के वैज्ञानिक महत्त्व पर प्रकाश डाला। आचार्य जी ने वातावरण के शुद्ध हेतु यज्ञ से वर्षा तथा आगामी फसल हेतु तैयारी के साथ-साथ यजमान के द्वारा किये गये अन्नदानादि के फल का वैदिक वर्णन किया। कार्यक्रम में अनेक युवा, स्त्री-पुरुष उपस्थित थे।

2. पं० रामचन्द्र आर्यसमाज के प्रेरणास्रोत थे-आचार्य वेदमित्र

इसी प्रकार दिनांक 13 मई 2013 को ग्राम भालोट जिला रोहतक में युवा, स्त्री-पुरुषों से खचाखच भरे पाण्डाल में प्रवचन करते हुए आचार्य जी ने कहा कि आपकी उपस्थिति पं० रामचन्द्र जी की कर्मठता तथा समाजसेवा को दर्शा रही है। सर्वप्रथम बृहद् यज्ञ किया गया, जिसमें परिवार के सदस्यों ने यजमान का पद ग्रहण किया। वहीं आस-पास के अनेक आर्य विद्वानों ने कार्यक्रम में भाग लिया। श्री आचार्य सत्यव्रत जी का ओजस्वी वेदोपदेश हुआ।

—मनोज आर्य Msc. पतञ्जलि योगाश्रम, भाऊ आर्यपुर, रोहतक

स्वास्थ्य चर्चा रसायनाधिकार

❑ स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, मो० : 9416133594

गतांक से आगे....

भृङ्गराज चूर्ण—

एक किलो भृङ्गराज के चूर्ण में आधा किलो काले तिल व आधा किलो आँवला मिलाकर 250 ग्राम खांड मिला लें। प्रतिदिन 10 ग्राम खाने से मनुष्य रोग, जरा तथा मृत्यु से विमुक्त हो जाता है। इसके निरन्तर प्रयोग से दृष्टि तेज होती है, सुनने की शक्ति व शरीर के सभी अंगों की क्रियाशीलता बढ़ती है। सफेद केश काले होने लगते हैं।

अश्वगन्धा रसायन—

अश्वगन्धा चूर्ण की 1 से 2 ग्राम तक की मात्रा का प्रतिदिन दूध या घी व 2 ग्राम मिश्री के साथ सेवन करने से कृश शरीर पुष्ट हो जाता है।

आंवला, काले तिल, भांगरा, इन्हें सम मात्रा में मिलाकर लम्बे समय तक निरन्तर सेवन करने से सफेद बाल काले हो जाते हैं व मनुष्य 100 वर्ष की आयु प्राप्त कर सकता है।

विधारा रसायन—

विधारा की जड़ के कपड़छान चूर्ण को शतावर के रस में सात बार भावित करके 2 ग्राम मात्रा में घी के साथ व सममात्रा में शहद या मिश्री मिलाकर दूध के साथ। महीने तक सेवन करने से मनुष्य बुद्धिमान्, मेधावी, बलवान, निरोग एवं वातव्याधियों से मुक्त हो जाता है।

अनुभूत योग—

लिसोड़ा (लेसवा) के बीज की मिंगी निकालकर उसका तेल निकलवा लें और उस तेल को प्रतिदिन बालों में लगायें व साबुन का प्रयोग नहीं करें जो बाल झड़ गए हों अथवा सफेद हो गए हों तो बाल भंवरे के समान काले बाल उग आते हैं।

अमृतवर्त्तिका या अमृतगुटिका—

त्रिफला, त्रिकटु, ब्राह्मी, गिलोय, लाल चित्रक, नागकेसर, सोंठ, भांगरा, सम्भालू की जड़, हल्दी, दारुहल्दी, भांग, चित्रक, दारचीनी, छोटी इलायची, मधुकपर्णी (गम्भारी छाल) वायविडंग, वच, इन सबका चूर्ण 172-172 ग्राम मिलाकर, इन सबको खजूर, गुड़ या पुराने से पुराने गुड़, जिसकी मात्रा 4 किलो 800 मिलाकर होनी चाहिए, में अच्छी प्रकार मथकर मिलाकर, 360 छोटे-छोटे लड्डू बना लें और शीतल जल के साथ प्रतिदिन शाम के समय भोजन से एक घंटा पहले सेवन करें। इस रसायन के सेवन काल में कड़वी, खट्टी और नमकीन चीजों के अध्यधिक सेवन से बचना चाहिए। इसके प्रयोग से अग्नि प्रदीप्त होती है, शरीर की कान्ति बढ़ती है, सफेद केश काले हो जाते हैं। दृष्टि शक्ति बढ़ती है। देह सबल हो जाती है। मनुष्य दीर्घायु व शक्तिसम्पन्न हो जाता है। यह अत्यन्त श्रेष्ठ रसायन है।

अमृतभल्लातक—

अब हम भिलावे से निर्मित उस रसायन का वर्णन करते हैं जो अद्वितीय रसायन है और आशु फलदायी है। भिलावे का सेवन करते समय कुछ विशेष सावधानियां रखनी जरूरी हैं। हमने भिलावे का सेवन बहुत व्यक्तियों व रोगियों को कराया है व अनुभव से ऐसा पाया है कि अधिक भूरे वर्ण के मनुष्य को भिलावा अनुकूल नहीं पड़ता। भिलावा खाते समय विशेष सावधानी की आवश्यकता है। जब भी भिलावे का सेवन करें। दो-तीन दिन के पश्चात् यदि भिलावा सातम्य नहीं होगा तो उपद्रव स्वरूप शरीर में उदर्द (ददोड़े) निकल आयेगा और खुजली चलने लग जायेगी। ऐसी अवस्था में तुरन्त भिलावे का प्रयोग बन्द कर देना चाहिये। अच्छा हो कि उच्च कोटि के आयुर्वेद के चिकित्सक की देखरेख में ही इसका सेवन किया जाये। वैसे हमने देखा है जहाँ भिलावा पैदा होता है जैसे झारखण्ड व उड़ीसा, वहां के आदिवासी भिलावे के साबुत फल को खा जाते हैं और उन पर किसी भी प्रकार का भिलावे का दुष्प्रभाव नहीं होता। उनको इसके सेवन करने की विशेष विधि है। हमने उनसे प्रश्न किया कि आप पर इसका दुष्प्रभाव क्यों नहीं होता जबकि आप इसको कच्चा ही खा लेते हो। उन्होंने बताया भिलावा खाते समय होठ बंद करके खाया जाये बाहर की हवा मुँह में नहीं जानी चाहिये और हमारे सामने उन्होंने कई भिलावे स्वयं खाकर दिखाए। भिलावे को आयुर्वेद शास्त्र अनुसार भलीभांति शुद्ध कर लेना चाहिये। फिर उसके रसायन बनाकर सेवन करने से कोई हानि नहीं होती। भिलावा योग का सेवन करते समय नारियल कच्चा या नारियल का पानी या गिरी या तेल का अधिकाधिक प्रयोग करते रहने से किसी प्रकार का दुष्परिणाम नहीं होता। इसके साथ-साथ रसायन के प्रयोग करने में जो सावधानियाँ बरतने का निर्देश है उनका भलीभांति पालन करना चाहिये। जैसे धूप में जाना, अग्नि में तापना, अधिक गर्मी में रहना अथवा निर्वात स्थान में रहना और अन्य पथ्य जैसे तामसी भोजन, खट्टा व तीक्ष्ण वस्तुओं का प्रयोग नहीं करना चाहिये।

परिपक्व भिलावे को लेकर बीच-बीच से काटकर दो-दो टुकड़े कर लें और इसकी एक किलो मात्रा को चौगुने जल में पकाओ। चौथाई जल रहने पर छान लो। भिलावे फेंक दो और क्वाथ में चौगुना दूध डालकर खोया बना ले। बाद में एक किलो घी व एक किलो देशी खांड मिलाकर सात दिन तक रख दे। फिर 5 से 10 ग्राम तक प्रतिदिन सेवन करे। विशेष गुण बढ़ाने के लिए इसी में चिरौंजी, पिस्ता, काजू और अन्य मेवे भी डाल सकते हैं। यह योग सब रसायनों का राजा है। महर्षि पुनर्वसु लिखते हैं—

ज्ञानबुद्धिप्रदीपेन यो नाविशति तत्त्ववित्।
आतुरस्यान्तरात्मानं न स रोगान् चिकित्सति॥

अर्थात् जो वैद्य शास्त्र ज्ञान तथा स्वकीया बुद्धि का दीपक लेकर रोगी के शरीर के भीतर प्रवेश नहीं करता वह रोगों की चिकित्सा नहीं कर सकता।

रसायनों के योग

अब हम चरक संहिता रसायनों के प्रकार, विधि और लाभ का महर्षि चरक के मतानुसार वर्णन करते हैं। जीवमात्र का कल्याण चाहने वाले महर्षि आत्रेय ने इस प्राणकामीय अध्याय में रसायनों के सिद्ध 37 संयोगों को बताया है। जैसे—शतपाक आमलक घृत, सहस्रपाक आमलक घृत, आमलकावलेह, आमलक चूर्ण, विडङ्गावलेह, अपर आमलकावलेह, नागबला रसायन, बला रसायन, अतिबला रसायन, चन्दन रसायन, अगुरु रसायन, धव रसायन, तिनिश रसायन, खदिर रसायन, शिंशपा रसायन, असन रसायन, अमृता रसायन, अभया रसायन, धात्री रसायन, मुक्ता रसायन, श्वेता रसायन, जीवन्ती रसायन, अतिसार रसायन, मंडूकपर्णी रसायन, स्थिरा रसायन, पुनर्नवा रसायन, भल्लातक रसायन (क्षीर), भल्लातक क्षौद्र, भल्लातक तैल, गुड भल्लातक, भल्लातक यूष, भल्लातक सर्पि, भल्लातक तैल, भल्लातक पलल, भल्लातक सत्तु, भल्लातक लवण, भल्लातक तर्पण, इस प्रकार ये 37 योग है।

हमने अपने अनुभव में पाया है कि इन 37 रसायनों में भल्लातक (भिलावा) अति उपयोगी व श्रेष्ठ है। हमने अनेक लोगों को विधि-विधान से इसका सेवन करवाया है और परिणाम बहुत उत्तम रहे हैं। यह अति आवश्यक है कि भल्लातक के प्रयोग से पहले मनुष्य की प्रकृति का विचार कर लेना चाहिए, क्योंकि सभी को यह रसायन उचित नहीं, किसी किसी को भिलावा सातभ्य नहीं पडता, वह अलग बात है, परन्तु भिलावे का सेवन अति उत्तम व लाभकारी सिद्ध हुआ है। निष्णात महर्षियों ने सब रसायनों में भलावे को विशेष महत्व दिया है। भिलावे का प्रयोग करने से पहले शरीर को शोधन करना चाहिए।

विरेचन आदि द्वारा काया शुद्धि करके रसायन का सेवन करना चाहिये। जिस प्रकार मलिन वस्त्र को रंगने से उस पर अच्छा रंग नहीं पड़ता इसी प्रकार वमन विरेचन आदि से शरीर को शुद्ध न करके ही रसायन का सेवन कराने से फल नहीं होता।

रसायन के सेवन से लम्बी आयु, स्मरणशक्ति, धारणशक्ति, आरोग्य, जीवन के अधिक दिनों तक तरुणता, कान्ति, वर्ण तथा स्वर में उदारता, शरीर एवं इन्द्रियों में शक्ति का संचार, जो कहा जाये सो हो जाये, वृषता (रति-शक्ति) अथवा प्रणति=सब लोक प्रणाम करने लगते हैं या सामने झुकने लगते हैं। कान्ति इच्छा या महत्त्वाकांक्षा, इन सब सद्गुणों की प्राप्ति होने लगती है। तात्पर्य यह है कि शरीर में उत्तम कोटि की या विशुद्ध रसरक्तादि धातुओं की प्राप्ति के उपाय का नाम रसायन है। अथवा जिन आहारों, विहारों एवं औषधों के सेवन से शरीर में प्रशस्त उत्तम या विशुद्ध रसादि धातु उत्पन्न हों वह **'रसायन'** माना जाता है। **क्रमशः**

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।